Pratidhwani the Echo
A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science
ISSN: 2278-5264 (Online) 2321-9319 (Print)
***Impact Factor: 6.28** (Index Copernicus International)*
UGC Approved, Journal No: 48666
Volume-VII, Issue-IV, April 2019, Page No. 355-360
Published by Dept. of Bengali, Karimganj College, Karimganj, Assam, India
Website: http://www.thecho.in

नागार्जुन की कविता में मानवतावादी चेतना

डॉ मधुछन्दा चक्रवर्ती

सह-प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, माउंट कार्मल कॉलेज, स्वायत्त, बैंगलौर

Abstract

Humanist Consciousness means humanity has been the creation of the vibrations in the mind for its all-round development. Over the years, mankind has seen many new dimensions of development and progressing along with rhythm with it has progressed in the same literature. Even new dimensions of development have been seen, as changes in human society have changed, along with literature has changed. The poet Nagarjun is said to be the greatest poet of the humanist consciousness. In every composition, the tribulation struggle of humankind can be realized and it also maintains the struggle of mankind through its poem, this is the special feature of Nagarjun that when we read his poems, they feel absolutely close to us, their sensation is true experience.

मानवतावादी चेतना का अर्थ है मानव का हित, उसका सर्वांगिण विकास के लिए मन में स्पंदन की सृष्टि होना। वर्षों से मानव जाति ने विकास के कई नए-नए आयाम को देखा है तथा उसके साथ ताल-से-ताल मिलाते हुए वह आगे बढ़ता रहा है। इसी क्रम में साहित्य में भी विकास के नए आयाम देखने को मिले हैं। जैसे-जैसे मानव समाज में बदलाव होता गया, उसके साथ साहित्य में भी बदलाव होता गया। साहित्यकारों ने मनुष्य जाति के विकास को अपनी हर रचना में स्थान दिया।

कवि नागार्जुन को मानवतावादी चेतना का सबसे बड़ा कवि कहा जाता है। उनकी हर रचना में मानव जाति के कष्ट, संघर्ष, विकास, संवेदना को महसूस किया जा सकता है। साथ ही वे अपनी कविताओं के जरिए मानव जाति के संघर्ष को कायम रखते हैं। नागार्जुन की एक और विशेषता यह है कि उनकी कविताओं से हम स्पष्ट समझ जाते हैं कि वे किसकी ओर इशारा करते हुए क्या कह रहे हैं। नाम ले चाहे न ले, उनकी कविता बेझिझक सब कुछ कह देने की क्षमता रखती है। इसी क्रम में उनकी कुछ कविताएँ है जिनमें उनकी यह सारी विशेषताएँ झलकती है। वे इस प्रकार है **प्रेत का बयान, गुलाबी चूड़ियाँ, अकाल और उसके बाद, काले-काले, नाहक ही डर गई हुज़ूर** इत्यादि। इन कविताओं के अलावा भी उन्होंने और कई अन्य समसामयिक विषयों पर कविताएँ लिखी है।

नागार्जुन का प्रारम्भिक जीवन काफी कठिनाईयों में गुज़रा है। अपने पिता के कंधे पर बैठकर अपने परिजनों के घर में घूमते रहने के कारण उनका घुमक्कड़ स्वभाव बन गया था। साथ ही वे बचपन से मेधावी

छात्र रहे हैं। संस्कृत, मैथिली, बांग्ला तथा हिन्दी भाषा के ज्ञानी थे तथा उन्होंने इन सभी भाषाओं में रचनाएँ की है। नागार्जुन जितना साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय रहे उतना ही राजनीति में भी रहे। उन्होंने देश में चल रहे प्रत्येक राजनीतिक तथा सामाजिक आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा जेल भी गए। उनकी कविताओं में जो कुछ भी वर्णित है उन सबका गहरा ताल्लुक नागार्जुन के जीवन से है।

नागार्जुन को और अधिक समझने के लिए उनकी कविताओं को समझना जरूरी है। सबसे पहले उनकी कविता **प्रेत का बयान** से शुरू किया जाए। इसमें एक प्रेत से नरक के यमराज उससे प्रश्न कर रहे हैं कि उसके प्राण कैसे निकले थे। पराधीन भारत से लेकर स्वाधीन भारत होने तक कई लोगों की जाने स्वाधीनता संघर्ष में गये, तो वही ग्रामीण इलाकों में लोग गरीबी, भूखमरी, अकाल, कालाजार के बुखार, पेचिस, प्लेग जैसी महामारी से मरते रहे हैं। यमराज भी शायद भारत की ऐसी दुर्दशा को देखकर यकीन नहीं कर सके। तो वे एक प्रेत से पूछते हैं कि उसके प्राण कैसे निकले। यह प्रेत कोई साधारण प्रेत नहीं है बल्कि स्वाधीन भारत के बिहार के पूर्णिया जिला के थाना धमदाहा, बस्ती रुपउली के प्राइमरी स्कूल का मास्टर है। जाति का कायस्थ है। वह झूठ नहीं बोलना चाहता है। क्योंकि वह एक शिक्षक है तथा उसके कुछ विशेषता है। पहली यह कि वह नीतिपरायणता(सत्य बोलने की हिम्मत) एवं जागरूकता कि स्वाधीन भारत का वह नागरिक होने के नाते उसके मन में जो स्वाधीन होने का गर्व। वह झूठ इसलिए भी नहीं बोलना चाहता है क्योंकि झूठ बोलना कानून के खिलाफ है। उसने बताया कि उसके प्राण आराम से पेचिश के वजह से निकले। इस कविता में विरोधाभास इस बात का है कि शिक्षक यह बात स्वाभिमान भरे स्वर में कहता है परन्तु वही इस कविता से यह भी पता चलता है कि हमारा देश राष्ट्रवादी भक्तों के कारण आज़ाद तो हो गया लेकिन इस आज़ादी से जितनी उम्मीद थी वह पूरी नहीं हो सकी। आज भी लोग गरीबी, भूखमरी और महामारियों के कारण मर रहे है। देश के प्रति गर्व होना मानवतावादी होना है परन्तु वही देश के लोगों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने की इच्छा रखना भी मानवतावादी होने के दायरे में आता है। परन्तु शासक तंत्र अभी भी इतना सजग नहीं हो सका है कि वह लोगों के इन तकलीफों को दूर कर सके। वर्तमान समय में फिर भी कुछ हद तक देशव्यापी तौर पर इन सब बातों की तरफ साधारण लोगों से लेकर शासन तंत्र तक के लोग सजग हुए है। परन्तु नागार्जुन ने जब यह कविता लिखी थी तब भारत की परिस्थिति बहुत बुरी थी।

अगली कविता है गुलाबी चूड़ियाँ। यह कविता जो भी पढ़ता है उसके मन में एक छोटी सी बच्ची और उसके बस ड्राइवर पिता की छवि आँखों में स्वाभाविक ही उतर आती है। वात्सल्य पूर्ण इस कविता की मानवतावादी सोच यही है कि इस कविता में पिता-पुत्री के बीच में स्नेह, प्रेम तथा श्रद्धा झलकती है। आज के युग में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा ज़ोर-शोर से लगाया जाता है। बेटियाँ हमारे समाज की उन्नति और विकास के लिए कितनी जरूरी है यह बात इसी से ही समझी जा सकती है कि एक बेटी ही है जो अगली पीढ़ी को जन्म देती है। फिर चाहे बेटी बेटी को ही क्यों न जन्म दे फिर भी अगली पीढ़ी को ही जन्म दे रही है। कविता में नागार्जुन ने कुछ यू पिता-पुत्री के वात्सल्य जनित सम्बन्ध को उद्धृत किया है। एक प्राइवेट बस का ड्राइवर है जिसकी एक सात साल की बच्ची है। ड्राइवर ने गियर से उपर हुक से काँच की चार गुलाबी चूड़ियाँ लटका कर रखी है। जो बस के रफ़्तार के मुताबिक हिलती रहती है। कवि के पूछने पर कहता है कि बच्ची को लाख समझाने पर भी वह मानती नहीं है और ड्राइवर को भी लगता है कि ये प्यारी सी चूड़ियाँ कुछ बिगाड़ती तो नहीं है किसी का। कवि और ड्राइवर की नज़रे मिलने पर कवि को

ड्राइवर की आँखों में दूधिया वात्सल्य छलकता हुआ दिखायी देता है। कवि स्वयं पिता है इसलिए उन्हें भी यह चूड़ियाँ भा जाती है। वही इसमें एक गुप्त संदेश यह भी दिखता है कि यदि ड्राइवर के सामने यह चूड़ियाँ रहेंगी तो उसे याद आती रहेगी कि उसकी बेटी घर पर उसकी प्रतिक्षा कर रही है तो वह तेज़ रफ़्तार में बस नहीं चलाएगा।

अकाल और उसके बाद नागार्जुन की सबसे प्रसिद्ध कविता है। कहाँ जाता है कि नागार्जुन ने ये कविता बंगाल के अकाल पर लिखा था। इस कविता में भूख और अकाल की भयंकरता नज़र आती है। जब खाने के लिए एक भी दाना इन्सानों को न मिले तो पशुओं को कहा से मिलेगा। तभी वह लिखते हैं कि खाना न बनने के कारण चूल्हा-चक्की भी उदास रह जाती है, कानी कुतिया, छिपकली, चूहे सबकी हालत खराब हो जाती है। गरीब परिवारों की गरीबी और भूखमरी की तसवीर यही पर खुलकर सामने आती है। फिर जैसे ही दाने घर में आने लगते हैं और आँगन से धुआँ उठना शुरू होता है तो घर भर की आँखों का चमक उठना स्वाभाविक है। दरअसल पूरी दुनियाँ में लोग अपनी पेट की आग बुझाने के लिए ही संघर्ष कर रहा है। जिसका पेट दो वक्त भरा हुआ है वह दूसरी चिन्ता कर रहा है। परन्तु गौण रूप से प्रतिदिन हर कोई रोज़ दो वक्त के खाने के इन्तेज़ाम में लगा हुआ है। ये भूख ही है जो लोगों को कुछ भी करने पर मजबूर कर देती है।

काले काले कविता में नागार्जुन ने प्रकृति के आलम्बन में 1980 के दशक की महँगाई, लोगों की काली करतूतों तथा परिवेश के बारे में लिखा है। पहले वह इस कविता है प्रकृति के बारे में लिखते हैं। प्रकृति में कुछ चीज़े स्वाभाविक रूप से काली होती है। जैसे सावन महिना स्वभाव से काला होता है। काले-काले बादल छाते हैं और बारिश होती है। काली-काली घटाएँ चारों और फैली होती है। कई बार तो दूर से दिखाई देने वाले पर्वत-पहाड़ भी काले रंग के नज़र आते हैं। उसी प्रकार आज समाज में भी जो परिवेश है वह काले रंग का हो चुका है।, लोग काली करतूत करने से कतराते नहीं है। चारों और चोरी, काला बाज़ारी, घूस खोरी, लूट-पाट, तोड़-फोड़ जैसी घटनाओं के कारण अफरा-तफरी फैली हुई है। काला बाज़ारी के कारण, घूस खोरी के कारण महंगाई बढ़ रही है। समाज में कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए सरकार को अध्यादेश जारी करना पड़ रहा है परन्तु वह भी इतना अजीब है कि उसका फैयदा नहीं हो पा रहा है।

नाहक ही डर गई, हुज़ूर कविता में एक एस.डी.ओ. की पत्नी जो कि सपने में देखती है कि एक भुक्खड़ के हाथों में बन्दूक है। वह सोचती है कि कहाँ से यह बन्दूक आ गयी है। पत्नी को डर इस बात का है कि कही वह भुक्खड़ हमला ना कर दे। सपने को देखकर डर के मारे चिल्लाने की वजह से सभी उसके पास आते हैं। नौकर उसे समझाता है कि वह बेकार में डर गयी है। दरअसल अकाल वाला थाना काफ़ी दूर है। इस कविता में भूखमरी से बेहाल लोगों की तस्वीर बिना कहे ही साफ हो जाती है कि कैसे लोग भूख के मारे कुछ भी करने को तैयार हो जाते है। भारत देश की यही विडम्बना रही है कि यहाँ प्राकृतिक प्रकोप, महामारी, भूखमरी से उतने लोग नहीं मरते जितने लोग शासन की लापरवाही तथा नौकरशाहो के जुल्म से मरते है। अकाल का भयंकर रूप इसमें चित्रित हुआ है।

नागार्जुन की यही सबसे बड़ी खासियत है कि उनकी कविताओं में वे स्पष्ट बोलते भी है तथा वही बोलते है जो जनता के मन में होता है। विवशता, डर, मृत्यु के बाद सत्य बोलने की हिम्मत, या फिर पिता

के मन का वात्सल्य हो हर चीज नागार्जुन बहुत स्पष्ट रूप में कविताओं में प्रकट कर देते हैं। उनकी कविता आज के युग में भी प्रासंगिक है। प्रासंगिक होने का कारण यह भी है कि उन्होंने आज़ादी के बाद के भारत को देखा है तथा भारत की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति को भी देखा है। आर्थिक रूप से पीछड़े हुए लोगों की तकलीफों को उन्होंने गहरे रूप में अनुभव किया है। उनका स्वयं का जीवन भी कष्टों से भरा रहा है। गाँव में रहते थे यही कारण है कि गाँव की साधारण जनता के साथ उन्होंने भी अपने जीवन में वही सबकुछ झेला है। तभी उनकी कविता जनता के हर कष्ट के साथ-साथ जनता के बीच रहकर जनता को ही लूटने वाले नेताओं तथा नौकरशाहों की पोल खोल कर वे रख देते हैं। रामविलास शर्मा के अनुसार – नागार्जुन की लिखी कविताओं में सबसे ज़्यादा संख्या राजनीतिक कविताओं की है और उनमें भी अधिकतर व्यंग्यपूर्ण हैं। ये कविताएँ साम्राज्यवाद के विरुद्ध हैं, सामंतवाद के विरुद्ध हैं उच्च मध्य वर्ग की जो आकांक्षाएँ हैं और जिस तरह की बनावटी ज़िंदगी वह जीता है, उसकी आलोचना भी इन कविताओं में है। शासन किस तरह से जनता से वादे करता है और उन्हें झुठलाता है, इसकी बहुत तीखी आलोचना नागार्जुन ने की है।[1] नागार्जुन की सभी कविताओं में यह गुण विद्यमान है।

नागार्जुन ने जैसे हिन्दी तथा मैथिली भाषा में कविताएँ लिखी है वैसे ही बांग्ला भाषा में भी कविताएँ लिखी है। परन्तु उनकी सभी कविताओं में मानवतावादी चेतना भरी पड़ी हुई है। इसका कारण है उसका विशाल हृदय जिसमें साधारण जन के लिए असीम करूणा एवं संवेदना भरी हुई है। नागार्जुन जब बांग्ला भाषा में कविता लिखते हैं तब भी कविताओं में वही भावनाएँ, वेग, आतुरता, स्पष्टता, साम्राज्यवाद-पूंजीवाद-सामंतवाद के खिलाफत इत्यादि सभी चीज़े जैसे अन्य भाषाओं में लिखी कविताओं में पायी जाती है वैसे ही बांग्ला भाषा में भी है। उनके द्वारा लिखित बांग्ला कविताएँ है **भावना प्रवण यायावर, प्रवचनेर फोयारा, कोथाओ कि बैराम, आद्या छान्दसी, आहा बेचारा चन्द्रशेखर, बिनिद्र चरणसिंह, ओ देरइ जन्य, कोथाय गेलो सिंह चरण, अघोषित भारे, ओइ माताल युवक** इत्यादि।

कविता **भावना प्रवण यायावर** में उन्होंने निराश्रित लोगों के बारे में लिखा है। कविता में वे एक बूढ़े आदमी और उसके अकेलेपन को देख कर दुखी हो जाते हैं और लिखते हैं –

ओइ जे बुड़ो मानुष
आध पागला झानु
मारा जाबेन एक दिन
ट्राम लाइनेर धारे पड़े धाकबेन
केउ नेइ जे ओके बुझिए-सुझिए
कोथाओ बसिए राखबे[2]

प्रतिदिन न जाने हम ऐसे कितने विक्षिप्त लोगों को देखते हैं, उन बूढ़े लोगों को देखते हैं जिनके बच्चों ने उन्हें घर से निकाल दिया है, उन लोगों को देखते हैं जिनका कोई नहीं है। ये लोग सड़क के किनारे भीख मांगते हुए, सड़कों पर ही अपनी ज़िन्दगी बिता कर चले जाते हैं। उनके जीने-मरने से आजकल के आधुनिक लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता। समाज तथा देश को इनकी जिम्मेदारी उठानी चाहिए थी लेकिन नहीं उठाया जा रहा है। जिस भारत को विश्व-गुरू का दर्जा दिया जाता है वहाँ लोगों की

मानसिकता एवं मनुष्यता इतनी कठोर और पशुवत हो गयी है। वह बूढ़ा आदमी अकेला है, आधा पागल है। कभी भी मर सकता है । उसे समझा-बुझाकर आराम करने और एक जगह बैठने के लिए कहने वाला कोई नहीं है। ऐसा कोई आत्मीय नहीं है उसका जो उससे कुछ कहे। एक अकेले, बूढ़े व्यक्ति के लिए जीवन के शेष अवस्था में चलना-फिरना कितना कठिन हो जाता है। नागार्जुन की इस कविता के जरिए समाज के ऐसे सभी वृद्ध और निराश्रित लोगों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। आखिर क्यों इन लोगों के समाज की उपेक्षा और अवहेलना झेलनी है? नागार्जुन अपना दुख व्यक्त कर रहे हैं।

आद्या छान्दसी कविता में वे वैसे तो वे देवी के बारे में लिखते हैं। नागार्जुन उस देवी का गुणगान कर रहे हैं वही जब वे बाग-बाजार में घूमने जाते हैं तो उन्हें एक स्त्री हाथ में पानी कलश उठाते हुए दिखी। कवि नागार्जुन बाग-बाजार में देखी उस स्त्री को देख कर सीधे उसकी तुलना देवी से करने लगते हैं। वह देवी जो देवी होते हुए भी घरेलु काम कर रही है। जो सबकी पीड़ा हरती है। जिसके देखने मात्र से मन का सारा अन्धकार मिट जाता है। दरअसल नागार्जुन भारतीय मानसिकता से स्त्री की दोहरी छवि को हटाना चाहते हैं। स्त्री का देवीय रूप सभी कोई पूजता है परन्तु भारत के घर-घर में बसी उस देवी को भूल जाना जो कि सच में दिन-रात एक कर देती है परिवार के भरण-पोषण और उसकी सुख-शान्ति में, क्या उसे भूल जाना सही रहेगा? नागार्जुन की इस कविता का दूसरा भाग इतनी सुन्दरता से इस भावना को दर्शाता है यथा—

ओ गो माँ! रूपसी कमलासने विमले
महाब्रह्मेर मानस कन्ये, जाड्य हरे
तव सुगम्भीर अनुकम्पाय कृतार्थ आमि
की जे हये गेछि बलो मोरे प्रियबन्दे
लभिनु आजि जन्म नव तव अनुग्रहे
ब्रह्म बेलाय बेड़ाते आसि हुगली तटे
बाग-बाजारेर पाशा पाशि आसार परे
तुमि दिले देखा कलशि हाथे जननि..
होलो दृष्टि विनिमय प्रीति स्निग्ध नेत्रे....[3]

ये वह स्त्री है जो ब्रह्मा की मानस पुत्री है, रूपसी है और कमल के आसन पर विराजमान है। परन्तु फिर भी इस स्त्री ने घर का भार अपने हाथों में उठा रखा है। ये एक प्रकार से स्त्री की छवि को सुधारने तथा उसे उसका सच्चा स्थान दिलवाने के लिए आन्दोलन करती कविता है। हमारे देश में स्त्री की क्या छवि है ये हम सभी को विदित है। एक तरफ नारी का गुणगान होता रहता है। वह भी उसी स्त्री का जो जीवन भर अपने पति तथा ससुराल वालों की प्रताड़ना सहन करते हुए चुप-चाप अपने कर्तव्यों का पालन करते-करते मृत्यु के मुख में एक दिन चली जाती है। इससे बड़ा विरोधाभास और कुछ नहीं हो सकता। स्त्री यदि अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाए, अपने आत्म-सम्मान के लिए कुछ करे, अपनी इच्छा से किसी से प्रेम करे, विवाह करे, नौकरी करके अपना जीवन और परिवार के सम्भालती है। परन्तु फिर भी उसे लोगों की गालियाँ खानी पड़ती है, उसके चरित्र पर ऊँगली उठायी जाती है, उसकी इज्जत खराब की जाती है। जिस देश के कविगण किसी नायिका के नख-शिख वर्णन करते हुए उसके शरीर के अंग-प्रत्यंग के बारे में लिख

कर धन कमाते रहे हैं उसी देश की स्त्री के शरीर को केवल भोग का पर्याय समझा जाता रहा है। यह तो समाज में स्त्री की स्थिति को स्पष्ट करता है कि उसका स्वरूप केवल मौसम और त्यौहार के अनुसार ही दिखता है।

डॉ संतोषकुमार तिवारी जी के अनुसार दरअसल नागार्जुन का काव्य भोगा हुआ यथार्थ है, उनमें अनुभूति की प्रामाणिकता है।[4] यही कारण है कि नागार्जुन की कविताएँ पाठकों के मन को छू जाती है। कवि जब स्वयं किसी घटना का प्रत्यक्ष साक्षी होता है तभी उसकी रचना में उसकी भावना की प्रबल होती है एवं उसकी सच्ची अनुभूति पाठक को भी अनुभव होती है। नागार्जुन सदैव ही लोगों के मन में उनके सच्चे अनुभवों के कारण ही जाने जाते रहे हैं।

संदर्भ :

1. व्यंग्य-कविताओं के अंतःतल में संवेदनशीलता(रामविलास शर्मा) gadyakosh.org
2. मै मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा – नागार्जुन, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1997, पृ,सं – 14
3. वही पृ,सं – 16.
4. नये कवि- एक अध्ययन – डॉ संतोषकुमार तिवारी, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नयी दिल्ली, संस्करण -- 1991 पृ, सं – 96